हमारे शिक्षक समुदाय में रहते हैं

आम तौर पर देखा जाता है कि विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकगण विद्यालय के परिवेश से ना आकर दूर से आते हैं। ग्रामीण इलाकों में शिक्षक को दो पहिया वाहन से आते हुए देखना आम बात है। जिनके पास ये सुविधा नहीं है वे बस या जीप में किराया देकर आते दिखाई देते हैं। जबकी उदय पाठशालाओं के शिक्षक विद्यालय के आस पास के इलाके से आते हैं। ये इलाके वे होते हैं जहाँ से बच्चे पाठशाला में पढ़ने आते हैं। ऐसा नहीं है कि शिक्षक स्थानिय निवासी है। उदय के शिक्षकों का गाँव में रहने के कई कारण हैं। प्रथम तो रोज–रोज शहर से आने जाने में शिक्षक का काफी समय बर्बाद होता है। जिसके कारण वह विद्यालय में बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाता है। ग्रामीण इलाकों में आवागमन के साधन भी अपर्याप्त होते हैं। ऊपर से उनका कोई निर्धारित समय भी नहीं होता है। ऐसे में शिक्षक विद्यालय में समय पर नहीं पँहुच पाता है और शाम को भी साधन छूटने या लेट होने के डर से जल्दी चला जाता है। जिसका सीधा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ता है।

दूसरा समुदाय में नहीं रहने के कारण शिक्षक समुदाय की बोली, भाषा, विचार, संस्कृती, रूचियों और व्यवसाय जैसी जीवन और व्यवहार से जुड़ी अनेकों बातों से अनजान होता है। जिसके कारण शिक्षक विद्यालय में पढ़ने आने वाले बच्चों की भाषा और

व्यवहार को समझ ही नहीं पाता है। जिसका असर बच्चे के सीखने पर पड़ता है और बच्चा शिक्षा के शुरूआती दिनों में ही पिछड़ जाता है। यदि शिक्षक समुदाय में रहता है तो वह गाँव की बोली– भाषा, पहनावा, रीति–रिवाज, त्यौहार, व्यवसाय, कृषि और सामाजिक स्थीतियों को समझ पायेगा। इससे शिक्षक बच्चों को उनकी स्थानिय भाषा में अपनी बात आसानी से समझा सकेगा और बच्चों को उनकी स्थानिय भाषा में अपनी बात आसानी से समझा सकेगा और बच्चे की बात भी समझ सकेगा। शिक्षण कार्य व विषय वस्तु को भी परिवेश से जोड़कर पढ़ाना आसान होगा। जोकी ग्रामीण शिक्षा केन्द्र एक महत्वपूर्ण विचार भी है कि शिक्षा की शुरूआत मात्र भाषा में परिवेश से जोड़ते हुए की जाए। इससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि विकसित होगी और पढ़ाई आसान और उपयोगी लगेगी।

समुदाय में शिक्षक के रहने से अभिभावकों के साथ सवांद के अवसर बढ़ जाते हैं। एक तरफ अभिभावक अपने बच्चों की शैक्षणिक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकता है। वहीं शिक्षक भी माता–पिता से मिलकर बच्चे की शैक्षिक समस्या के उचित कारणों व उपायों को जान सकता है।

उदय के शिक्षक बच्चों के साथ शैक्षिक नवाचार पर कार्य करते हैं। ऐसे में शिक्षा में किये जारहे नवीन प्रयोगों के प्रति समुदाय को जागरूक करना तथा उनकी शिक्षा दृष्टि का विस्तार करने हेतु

नियमित सम्पर्क और संवाद की आवश्यकता होती है। ताकी गांवों में शिक्षा को लेकर लोगो की समझ बड़े और वे अपने बच्चों की बेहत्तर शिक्षा के लिये अपने आपको तैयार कर पाये।

उदय पाठशालाओं के शिक्षक समुदाय को जागरूक कर अपने बच्चों को बेहतर स्कूल मुहैया कराने के प्रयास करते हैं। इस कार्य में वे समुदाय को स्कूल से जोड़ने तथा स्कूल के समस्त क्रियाकलापो में भागीदार करने का प्रयास करते है। हमारा मानना है कि समुदाय की भागीदारी के बिना अच्छे सार्वजनिक स्कूल चलाना सम्भव नहीं है। समुदाय अपने बच्चों को कैसी शिक्षा दिलाना चाहता है। यह तभी सम्भव है जब स्कूल सामुदायिक होंगे। स्कूल का संचालन समुदाय की देख रेख में होगा। तभी जाकर समुदाय अपने बच्चों को वो शिक्षा दे पायेगा जैसी वे चाहते है।

इसके लिये समुदाय की शिक्षा को लेकर व्यापक समझ बनाना जरूरी है। तभी समुदाय ऐसे स्कूल खड़े कर पायेगा और सरकार पर भी ऐसे स्कूलों के लिये दबाव डाल पायेगा। इस कार्य को पूरा करना है तो यह काम गाँव वालों के बीच में रहकर ही किया जा सकता है। इसके लिये जितने समय और प्रयास की आवश्यकता है वह अप डाऊन करके नहीं किया जा सकता है। इसलिये उदय के शिक्षक समुदाय (गाँव) में रहते हैं।

हमारे शिक्षक समुदाय में रहते हैं

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र